विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

वर्ष : 1 अंक : 3 सितंबर, 2008

संगोष्ठी

हिंदी को विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा बनना है : डॉ. शंभु नाथ

डॉ. वसंत कुमार बनवारी

डॉ. अरविन बुलेल

स्वागतम्

विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के नए सदस्य

मॉरीशस गणराज्य के मंत्रिमंडल का पुनर्गठन 13 सितंबर, 2008 को किया गया। इसके अनुसार अब शिक्षा, संस्कृति एवं मानव संसाधन मंत्रालय का कार्यभार माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी तथा विदेश, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं सहकारिता मंत्रालय का कार्यभार डॉ. अरविन बुलेल ने संभाला है।

विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद में शिक्षा, संस्कृति एवं विदेश मंत्रालय के माननीय मंत्रीगण सदस्य होते हैं। चूँकि पुनर्गठित मंत्रिमंडल में शिक्षा एवं संस्कृति दोनों मंत्रालयों को मिलाकर एक कर दिया गया है और इसका कार्यभार माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी को सौंपा गया है, इसलिए शासी परिषद में इस बार मॉरीशस के दो ही मंत्री सदस्य होंगे।

विश्व हिंदी सचिवालय शासी परिषद के माननीय सदस्य डॉ. वसंत कुमार बनवारी तथा डॉ. अरविन बुलेल का हार्दिक स्वागत करता है। ●●

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, भारत के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. शंभु नाथ द्वारा संबोधन

24 जून, 2008 को विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस एवं उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ (भारत) के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी की वर्तमान स्थिति पर एक दिवसीय संगोष्ठी व काव्य-पाठ का आयोजन मॉरीशस के बुद्धिजीवियों एवं रचनाकर्मियों तथा हिंदी प्रेमी सहृदय जनता के लिए एक ऐतिहासिक स्वर्णिम दिन था, जब दोनों देशों के विचार और काव्य-रस की धाराएँ एक दूसरे में मिलकर अपने प्रवाह में सबको बहा ले गई।

संगोष्ठी का आयोजन मॉरीशस के इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सभागार में किया गया। मंच पर स्थित मंडलाकार कुर्सियों पर विद्यामान थे--संगोष्ठी के अध्यक्ष विश्व प्रसिद्ध साहित्यकार मॉरीशस के रचनाधर्मी प्रो. अभिमन्यु अनत, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. शंभु नाथ, संस्थान के निदेशक श्री अरुन सिंह, कन्हैयालाल माणिकलाल हिंदी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ के निदेशक प्रो. जयसिंह 'नीरद' विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस की महासचिव डॉ. (श्रीमती) विनोद बाला अरुण तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के प्रो. अश्विनी कुमार श्रीवास्तव।

प्रारंभ में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के प्रतिनिधि मंडल एवं अन्य विशिष्ट विभूतियों का परिचय कराते हुए विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. (श्रीमती) विनोद बाला अरुण ने अतिथियों का स्वागत

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. (श्रीमती) विनोद बाला अरुण द्वारा स्वागत

किया। उन्होंने विश्व हिंदी सचिवालय की गतिविधियों और उद्देश्यों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह संगोष्ठी बहुत महत्वपूर्ण है। भारत के हिंदी के हृदयप्रांत उत्तर प्रदेश और विश्व के हिंदी के प्राणदेश मॉरीशस का मिलन हिंदी के वैश्विक उन्नयन के लिए अत्यंत शुभ है। मैं चाहती हूँ कि ऐसी अन्य गोष्ठियाँ हों जिससे यह शुरुआत विस्तृत आयाम प्राप्त कर सके। विश्वव्यापी हिंदी समुदाय से अधिकाधिक संबंध और संवाद स्थापित करके ही हम हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा की गरिमा प्रदान कर सकेंगे।

प्रारंभ में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के निदेशक श्री अरुन सिंह ने प्रतिनिधि मंडल के मॉरीशस आगमन पर विश्व हिंदी सचिवालय के सहयोग एवं वृहद् उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए भावी योजनाओं की जानकारी दी।

कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी हिंदी तथा भाषा विज्ञान संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. जयसिंह 'नीरद' ने इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सभागार को हिंदी के तीर्थराज प्रयाग की संज्ञा देते हुए इस बात पर हर्ष और संतोष व्यक्त किया कि विश्व हिंदी सचिवालय और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के पारस्परिक सहयोग के नए-नए क्षितिज सामने आने लगे हैं। प्रो. 'नीरद' ने मॉरीशस के महान कृतिकारों पं. विष्णुदयाल, पं. आत्माराम, जयनारायण राय, सोमदत्त बखोरी, ब्रजेंद्र भगत मधुकर, रामदेव धुरंधर आदि को मॉरीशस के हिंदी साहित्य का गौरव बताते हुए वहाँ की समृद्ध साहित्य-परंपरा पर प्रकाश डाला। उन्होंने हिंदी के वैश्विक प्रसार के सामने आनेवाली अनेक चुनौतियों को प्रस्तुत किया और आह्वान किया कि भारत और मॉरीशस के हिंदी प्रेमी और साहित्यकार मिलकर इन चुनौतियों का सामना करने के लिए कटिबद्ध हों। प्रो. 'नीरद' ने कन्हैयालाल माणिकलाल हिंदी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ के स्वरूप, महत्वपूर्ण कार्यकलापों तथा भावी योजनाओं की चर्चा करते हुए विश्व हिंदी सचिवालय को विद्यापीठ के हर संभव सहयोग देने की पेशकश की।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अश्विनी कुमार श्रीवास्तव ने विश्व में हिंदी की दशा और दिशा पर प्रमाणिक तथ्य और साक्ष्य प्रस्तुत करते हुए विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि वैश्विक स्तर पर हिंदी अध्यापन में एकरूपता लाने के लिए जनवरी, 2009 में एक संगोष्ठी आयोजित की जा रही है। इस संगोष्ठी में भारत के 30 और विदेशों में हिंदी प्रशिक्षण से जुड़े हुए विद्वान बैठकर पाठ्यक्रम बनाएंगे। प्रो. श्रीवास्तव ने विश्व में हिंदी के प्रचार और प्रसार पर संतोष व्यक्त किया तथा विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयासों की भूरि-भूरि सराहना की।

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. शंभु नाथ ने अपने संवेदनशील वक्तृता से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर लिया। उन्होंने प्रारंभ में हिंदी की विकास यात्रा का विहंगावलोकन करते हुए कहा कि हिंदी को संस्कृत भाषा और साहित्य की समूची परंपरा उत्तराधिकार में मिली है। इस उत्तराधिकार को पाए बिना हिंदी का अस्तित्व संभव नहीं था, किंतु हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि हिंदी में लोक चेतना की भी एक परंपरा रही है। डॉ. शंभु नाथ ने हिंदी की संभावनाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी निस्संदेह साहित्य की दृष्टि से पूरी तरह सक्षम है। गुण और परिमाण दोनों दृष्टियों से हिंदी का साहित्य विश्व की किसी भी भाषा के साहित्य से किसी भी दृष्टि से कम नहीं किंतु अभी हिंदी को विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा बनना है जिसके लिए पर्याप्त प्रगति के बावजूद कुछ ठोस प्रयास करने होंगे। वैश्वीकरण और

संगोष्ठी में प्रतिभागीगण

बाज़ारवाद के इस दौर में हिंदी के प्रसार की संभावनाओं के नए क्षितिज खुले हैं। रोजगार की नई संभावनाएँ सामने हैं। इसलिए हिंदी का भविष्य उज्वल है, इसमें रंच मात्र भी संदेह नहीं। उन्होंने उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान और विश्व हिंदी सचिवालय के सहयोग की पारस्परिक संभावनाओं को रेखांकित करते हुए संस्थान द्वारा पूर्ण सहयोग दिए जाने के लिए आश्वस्त किया। उन्होंने मॉरीशस के बुद्धिजीवियों, रचनाकर्मियों एवं हिंदी भाषी जनता से मिले स्नेह और आतिथ्य के

लिए आभार व्यक्त किया।

मॉरीशस के साहित्यकार प्रो. अभिमन्यु अनत ने अपने मर्मस्पर्शी भाषण में भारत में बढ़ते अंग्रेजी के प्रभाव पर खेद व्यक्त किया और कहा कि भारत में उन रिश्तों का भी अंग्रेजीकरण किया जा रहा है

मॉरीशस के सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. अभिमन्यु अनत द्वारा संबोधन

जिनकी भारतीय मिठास हम बचपन से उम्र की इस दहलीज तक निभाते आए हैं। रिश्ते तो रिश्ते होते हैं, उनको किसी दूसरी भाषा में उस आत्मीयता और मिठास के साथ रूपांतरित नहीं किया जा सकता।

उन्होंने प्रतिनिधि मंडल के मॉरीशस पधारने पर उसका हार्दिक स्वागत किया और दोनों देशों के रचनाकारों और साहित्य प्रेमियों के मिलकर काम करने पर बल दिया।

अंत में विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव एवं संगोष्ठी के संचालक डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने माननीय अतिथियों एवं सुधी श्रोताओं को हार्दिक धन्यवाद दिया।

इस अवसर पर विचार गोष्ठी के बाद भोजनोपरांत एक हिंदी काव्य-पाठ का आयोजन भी किया गया जिसकी अध्यक्षता डॉ. शंभु नाथ ने

काव्य-पाठ करते हुए डॉ. जयप्रकाश कर्दम, भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस में द्वितीय सचिव

की। इस काव्य-पाठ में भारत और मॉरीशस के जिन कवियों ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को काव्य-रस में आकंठ डुबाया उनके नाम हैं डॉ. जयसिंह 'नीरद', प्रो. अभिमन्यु अनत, डॉ. जयप्रकाश कर्दम, डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि, डॉ. राजरानी गोबिन, डॉ. हेमराज सुंदर, श्री राज हीरामन, श्रीमती कल्पना लाल और श्रीमती राधा माथुर। काव्य-गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. शंभु नाथ ने जब अपनी कविता 'आओ बनायें इंद्रधनुष' सुनाई तो श्रोताओं के आगे प्रकृति के नाना रूप उभरकर आने लगे। महज़ डेढ़ घंटे के इस काव्य-पाठ में सभी कवियों ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर लिया।

मुंबई, 06.8.2008

आदरणीय विनोद बाला अरुण,

सादर नमस्कार।

'विश्व हिंदी समाचार' का अंक-2 (जून 2008) मिला। स्मरण हेतु आभार।

'हिंदी की दशा और दिशा' में जो विचार आपने प्रकट किये हैं, वे अनुकरणीय हैं, मैं आपसे शतप्रतिशत सहमत हूँ।

"हिंदी के विश्व व्यापी अभियान के अश्वमेध को पूरा करते हुए हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने" के स्वप्न को साकार करने के भाई राजेंद्र प्रसाद मिश्र के कंधे से कंधा मिलाकर प्रत्येक हिंदी के हित चिंतक को साथ देना चाहिए।

माननीय धर्म गोकुल के अनुसार हमें नागरी लिपि का भी प्रचार-प्रसार करना ही होगा।

मैंने आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन की विस्तृत रपट के साथ हिंदी के वर्चस्व के बारे में 'प्रोत्साहन' के अंक-71 में विस्तार से प्रकाशित किया है।

आपने 'विश्व हिंदी समाचार' त्रैमासिक प्रकाशित कर अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किया है। बधाइयाँ स्वीकार करें। यदि संभव हो तो इसे मासिक करें। कुछ अधिक पृष्ठ इसमें जोड़ने के साथ-साथ सूचनाएं, कविता, कहानी, समीक्षा आदि साहित्यिक सामग्री भी जोड़ें। लघु कथाओं को भी प्राथमिकता से प्रकाशित करें। इससे जन समुदाय की इसमें रुचि बढ़ेगी।

इस क्षेत्र में हमसे जो सेवा लेना चाहें ले सकती हैं, हम सहर्ष आपके साथ हैं। हमारा तो जीना मरना ही हिंदी में हैं। मेरी पंक्तियाँ है:

"जन्म लिया जब से धरती पर, हिंदी ही हिंदी पायी है,

हिंदी खायी, हिंदी पी ली, हिंदी की ओढ़ी रजाई है।

बस एक सदिच्छा है बाकी, जब अंत समय हो जाना,

बस मेरी अर्थी पर यारो, हिंदी का कफ़न उढ़ा देना।"

जय विश्व नागरी

हिंदी का एक सिपाही

जीवितराम का. सेतपाल, प्रधान संपादक - 'प्रोत्साहन'

महासचिव की ओर से

हिंदी दिवस : अस्मिता की स्मृति

14 सितंबर को भारत और विश्व के अनेक देशों में धूम-धाम से हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर भारत गणराज्य की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित समारोह में कहा कि हमें हिंदी में श्रेष्ठ, स्तरीय और प्रासंगिक मौलिक रचनाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए। इस समारोह में हिंदी को राष्ट्र भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए परम आवश्यक मुद्दे को उठाते हुए भारत के गृहमंत्री माननीय शिवराज पाटील ने कहा कि जब तक विदेशी भाषा के प्रति मोह नहीं छूटेगा और हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए अंतरात्मा से आवाज नहीं आएगी तब तक इस दिशा में सफलता नहीं मिल सकती।

मेरे विचार से 14 सितंबर भारत में हिंदी को मात्र राजभाषा बनाने का ही दिवस नहीं है, यह विश्व भर में फैले हम सब हिंदीभाषियों के लिए हिंदी की अस्मिता की स्मृति का प्रेरक दिवस भी है। इस समारोह के आनंद और उत्साह की सराहना करते हुए हमें इससे जुड़े गंभीर प्रश्नों पर चिंतन-मनन भी करना है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि हिंदी भारत की राजभाषा होने के साथ ही साथ बहुसंख्यक भारतीय समाज की संपर्क भाषा और विश्व भर में बसे हिंदी समुदाय की सांस्कृतिक प्रेरणा की भाषा है। हिंदी की इस विशिष्ट स्थिति को ध्यान में रखते हुए हमें हिंदी के विकास और विस्तार के लिए सकारात्मक कदम उठाने हैं।

हिंदी के विश्व-पटल पर दृष्टि डालने पर यह स्पष्ट होता है कि हिंदी की प्रतिष्ठा के लिए आशाजनक प्रयत्न हो रहे हैं। आप्रवास के देशों में हिंदी भाषी संस्थाएँ हिंदी के गौरव को सुरक्षित और संवर्धित करने में प्राण-प्रण से लगी हुई हैं। हिंदी पाठशालाओं, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो और टी.वी. जैसे संचार माध्यमों के साथ ही साथ ई-पत्रिकाओं के माध्यम से हिंदी के उन्नयन का कार्य सर्वत्र तेजी से चल रहा है। कहानियों, कविताओं, निबंधों, संस्मरणों और अन्य विधाओं का लेखन साहित्य की कसौटी पर खरा उतर रहा है। इनके माध्यम से हिंदी को जीवंत और अधुनातन अभिव्यक्ति की भाषा के रूप में स्थापित करने के सार्थक प्रयत्न हो रहे हैं। इनकी उपेक्षा न करके इन्हें साहित्य की मुख्य धारा से जोड़ने का सुचिंतित और सुविचारित प्रयत्न करना अपेक्षित है।

वैश्विक हिंदी की आभा को प्रखर करने के लिए विश्व भर में जो भी प्रयत्न चल रहे हैं, वे अभिनंदनीय हैं। हमें इस बात की चिंता नहीं करनी है कि वे परिमाण, परिणाम और प्रभाव की दृष्टि से छोटे हैं या बड़े हैं। हमें उनकी प्रामाणिकता, प्रतिबद्धता और विश्वसनीयता की सराहना करनी चाहिए। इन प्रयत्नों से ही हिंदी विश्व में अपने बहुप्रतीक्षित गौरव को प्राप्त कर सकेगी। इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए विश्व भर में फैली समस्त हिंदी संस्थाओं को सकारात्मक सोच के साथ संग-संग आगे बढ़ना चाहिए। इस संसार में श्रेष्ठ लक्ष्य की सिद्धि के लिए सहयोग और संगठन से बढ़कर और कोई साधन नहीं है।

हिंदी की प्रगति के प्रति आप्रवासी हिंदी समुदाय की आकांक्षाएं यद्यपि बड़ी उदात्त, उद्दाम एवं गहन हैं लेकिन उनकी समस्याएँ भी भीषण एवं जटिल हैं। ये जिन देशों में रहते हैं, उनकी मुख्य भाषा के प्रभाव से इन्हें जूझना पड़ता है। स्थानीय भाषा की अधिक उपयोगिता एवं उसके वर्चस्व के कारण बच्चों के मन में हिंदी के प्रति उत्साह कम होने लगता है और माता-पिता भी इस दिशा में उदासीन होने लगते हैं।

इन देशों में प्रकाशन की समस्या भी गंभीर है। पत्र-पत्रिकाओं एवं पुस्तकों के प्रकाशन के लिए प्रायः उन्हें भारत की ओर देखना पड़ता है क्योंकि हिंदी में प्रकाशन की सुविधा उनके देशों में आसानी से उपलब्ध नहीं है। औपचारिक शिक्षा का अंग न होने के कारण इन देशों में हिंदी शिक्षण प्रायः स्वयंसेवी संस्थाएँ करती हैं जिन्हें प्रायः आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। रोजगार की भाषा न होने के कारण लोगों के मन में इसके प्रति लगाव एवं रुझान भी कम है। साथ ही हिंदी संस्थाओं में एक साथ मिलकर संगठित रूप से कार्य करने की कमी भी प्रायः दिखाई पड़ती है जिसके कारण अनेक संस्थाओं के होने पर भी संगठित प्रभाव और समुचित दबाव शासन तंत्र पर नहीं पड़ता है।

इतिहास के पन्नों को पलटकर देखें तो पता चलेगा कि आप्रवास के समस्त देशों में हिंदी की गरिमा के संवर्धन के लिए हमारे पूर्वजों ने मिलकर कार्य किया था। संगठन की शक्ति से उन्होंने भविष्य का भव्य निर्माण किया था। आज इसी मंत्र को लेकर आगे बढ़ना है।

किसी भी भाषा की व्यापकता और प्रतिष्ठा उसे बोलनेवालों की प्रतिबद्धता पर निर्भर करती है। भाषा जितने वैविध्यपूर्ण अनुभव की अभिव्यक्ति का साधन बनेगी, उतनी ही समर्थ एवं सक्षम होगी। इसीलिए जो समाज अपनी भाषा का निर्भीकता और सहजता से प्रयोग करता है, संसार उसका अभिनंदन करता है।

इस परिप्रेक्ष्य में मैं ऐसा समझती हूँ कि हिंदी-जगत की सबलता और दुर्बलता का आकलन करना और इसके आधार पर हिंदी की वैश्विक प्रगति की कठिनाइयों को दूर करना आज की बहुत बड़ी आवश्यकता है। इस कार्य के संपादन में विश्व हिंदी सचिवालय एक सेतु का कार्य कर सकता है।

मैं विश्व की सभी हिंदी संस्थाओं और हिंदी के समस्त शुभचिंतकों से निवेदन करना चाहती हूँ कि वे अपने-अपने देश में हो रही हिंदी की प्रगति का विवरण भेजें, जिसमें सफलताओं के साथ-साथ समस्याओं का भी समावेश हो। सचिवालय आपकी सफलताओं को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करेगा जिससे अन्य लोग उनसे प्रेरणा ले सकें और आपकी समस्याओं को प्रभावी ढंग से उपयुक्त अधिकारियों और संस्थाओं तक पहुँचाएगा जिससे उनके निराकरण की संभावना अधिक बलवती हो सके।

विनोदबाला अरुण

संपादकीय

अब देर न करें

15 जुलाई, 2007 को आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन न्यूयॉर्क में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में भी सूरीनाम में हुए सातवें सम्मेलन की तरह 10 मंतव्य पारित किए गए। सातवें और आठवें सम्मेलनों से पहले भी छह विश्व हिंदी सम्मेलन भारत, मॉरीशस, त्रिनिदाद एवं टोबेगो और लंदन में आयोजित किए गए और उनमें भी मंतव्य पारित हुए थे। भारत और मॉरीशस ने दो-दो विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन किया है।

'विश्व हिंदी समाचार' के इस अंक में पिछले आठों विश्व हिंदी सम्मेलनों में पारित मंतव्य एक जगह प्रकाशित किए जा रहे हैं ताकि विश्व के हिंदी प्रेमी इस बात से अवगत हो सकें कि इन सम्मेलनों में पारित मंतव्य कौन-कौन से थे और उन पर अब तक क्या कार्रवाई की गई है और क्या करना शेष है।

हम इस बात से अवगत हैं कि एक ओर विश्व स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य विदेशों में बसे हिंदी प्रेमियों द्वारा स्थापित हिंदी संस्थाओं और मंचों के माध्यम से तेजी से आगे बढ़ रहा है, तो दूसरी ओर भारत सरकार द्वारा वर्धा में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय और मॉरीशस सरकार के साथ मिलकर मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना करके वैश्विक स्तर पर हिंदी के अध्ययन-अध्यापन तथा प्रचार-प्रसार का मार्ग सुगम कियां गया है। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा भी वैश्विक स्तर पर हिंदी अध्यापन में एकरूपता लाने की दृष्टि से पाठ्यक्रम बनाने के लिए संभवतः जनवरी, 2009 में एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने की योजना बना रहा है। इस समय विश्व के लगभग 12 विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ स्थापित हैं। कुछ अन्य विश्वविद्यालयों में भी हिंदी पीठ स्थापित करने की दिशा में भारत सरकार प्रयत्नशील है। हंगरी, पोलैंड, रोमानिया, इटली, जापान, दक्षिण कोरिया, यूक्रेन, रूस, उज़्बेकिस्तान, सूरीनाम, फीजी, गयाना और मॉरीशस आदि देशों में हिंदी अध्यापन को प्रोत्साहित करने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं।

आज संपूर्ण विश्व में हिंदी का अनुकूल वातावरण बनाने के लिए भारतीय मिशनों द्वारा भी 10 जनवरी को 'विश्व हिंदी दिवस' मनाने की एक अच्छी शुरुआत हुई है। हिंदी के प्रचार-प्रचार के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का सदुपयोग करते हुए विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा हिंदी-अंग्रेजी वेबसाइट के निर्माण-कार्य पर आवश्यक कार्रवाई शुरू की जा चुकी है। अतः देखा जाए तो अब तक हुए विश्व हिंदी सम्मेलनों में पारित लगभग सभी मंतव्यों पर या तो कार्रवाई पूरी हो चुकी है या फिर की जा रही है। इतना कुछ होने के बावजूद हम हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाने के अपने मूल लक्ष्य की ओर तेजी से नहीं बढ़ पा रहे हैं। इस दिशा में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा कई प्रभावकारी कदम उठाए गए हैं। किंतु लक्ष्य प्राप्त करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के जितने सदस्य देशों का समर्थन जुटाना है, वह सरकारी स्तर पर उतना सहज नहीं है जितना कि हम सोचते हैं। इसके लिए मॉरीशस में आयोजित चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन में पारित मंतव्य के अनुरूप "विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़े लोगों को चाहिए कि वे अपने-अपने देशों की सरकारों से संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए समर्थन प्राप्त करने का सार्थक प्रयास करें।" हम संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों का समर्थन जुटाने में जितना विलंब करेंगे, हमें लक्ष्य तक पहुँचने में भी उतना ही विलंब होगा, और हम जानते हैं कि किसी भी अच्छे कार्य में विलंब करना शुभ संकेत नहीं होता। आज पूरे विश्व में भारत की जो साख है और जो निरंतर बन रही है, उसे भुनाने का यह एक सही अवसर है। यदि इस वक्त हम चूक गए तो आगे चलकर पछताना पड़ेगा।

यह कार्य उतना आसान नहीं, जितना कि ऊपरी तौर पर लगता है। इसमें समय भी लग सकता है। इसके लिए विश्व के समस्त हिंदी प्रेमियों और संगठनों को सुनियोजित और सुसंगठित रूप से हिंदी का प्रचार-प्रसार करते हुए इसे अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, स्पेनिश, चीनी और अरबी भाषाओं के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिखाने के लिए स्थानीय स्तर पर अनुकूल वातावरण का निर्माण करने हेतु कंधे से कंधा मिलाकर हर संभव प्रयास करना होगा।

सभी हिंदी प्रेमियों एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़ी संस्थाओं से अनुरोध है कि वे अपने आसपास होनेवाली हिंदी की गतिविधियों की रिपोर्ट व तसवीरें विश्व हिंदी सचिवालय को भिजवाते रहें जिससे कि विश्व के किसी भी भाग में हिंदी के संबंध में हो रही गतिविधियों से पूरे विश्व को अवगत कराया जा सके।

(डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र)

प्रधान संपादक

डॉ. (श्रीमती) विनोदबाला अरुण

संपादक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र

विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस

World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 6761196
Fax (230) 6761224
E-mail : whsmauritius@intnet.mu
sgwhs@intnet.mu / dsgwhs@intnet.mu

हिंदी भाषा में भारतीयता की पहचान है :

प्रो. पुष्पिता अवस्थी

विदेश में जब विदेशियों द्वारा उनके ही लिए संचालित विदेशी भाषा विभाग के ज़रिये बहुआबादी और बहुभाषी देश भारत की भाषायी नीति को जानने की उत्सुकता जगती है तो प्रसन्नता होती है। वे जानना चाहते हैं कि विपुल भाषी देश में भारतीय संस्कृति के अस्तित्व और अस्मिता को बचाये रखने के लिए सरकारी तंत्र किस तरह से समायोजन करता है। इसके लिए नीदरलैंड स्थित लेडिंग विश्वविद्यालय के केरन इंस्टीट्यूट द्वारा हिंदी की प्रख्यात साहित्यकार

डच भाषा के अनुवादक डॉ. डिक प्लकर के साथ काव्य-पाठ करते हुए प्रो. पुष्पिता अवस्थी

प्रो. पुष्पिता अवस्थी को आमंत्रित किया गया था, जिन्होंने कविता, कहानियों के अतिरिक्त अनेकानेक आलोचनात्मक पुस्तकें लिखी हैं और सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। आज कल नीदरलैंड स्थित हिंदी यूनिवर्स फाउंडेशन के निदेशक के पद पर कार्य करते हुए वे विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं।

कार्यक्रम के प्रारंभ में केरन इंस्टीट्यूट के सचिव डॉ. तेयो दम्स्त्येक ने उनका स्वागत करते हुए संक्षिप्त जीवन परिचय दिया। डॉ. तेयो स्वयं डेनमार्क के विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा विभाग में रीडर रहे हैं। हिंदी भाषा के अतिरिक्त आप ग्रीक, लेटिन, अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रेंच भाषाओं के भी ज्ञाता हैं। सरनामी हिंदी भाषा और साहित्य पर लिखी अपनी अनेकानेक पुस्तकों के लिए वे छठे विश्व हिंदी सम्मेलन, लंदन में सम्मानित हो चुके हैं।

प्रो. पुष्पिता ने अपने व्याख्यान में विश्व में भारत की बढ़ती हुई शक्ति का उल्लेख करते हुए कहा कि --भारत में अनेकानेक भाषाएँ प्रचलित हैं और उससे भी कहीं अधिक बोलियों में बातचीत होती है। उन्होंने आगे कहा कि--विश्व में भाषा के माध्यम से किसी भी देश का व्यक्तित्व और उसकी पहचान बनती है। हिंदी भाषा एक ओर यदि भारत वर्ष की राजभाषा है तो दूसरी ओर वहाँ प्रांतीय भाषाओं की विविधता है, जिसे संवैधानिक मान्यता प्राप्त है और जिनके उत्थान के लिए भारत सरकार और प्रांतीय सरकारें प्राणपण से सक्रिय हैं।

भारत की आज़ादी के बाद भाषा के संदर्भ में संवैधानिक इतिहास प्रस्तुत करते हुए प्रो. पुष्पिता ने अपने व्याख्यान में वर्तमान समय में भारत की वैविध्यपूर्ण भाषायी शक्ति का प्रामाणिक व्यौरा प्रस्तुत किया जिससे श्रोतागण चमत्कृत और संतुष्ट हुए।

लेडिंग विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा का अध्यापन इंडोलॉजी विभाग के अंतर्गत होता है जहाँ एशिया के देशों की संस्कृति और वहाँ की भाषाओं का अध्ययन होता है। इस संस्था को 'केरन इंस्टीट्यूट' कहते हैं। यहाँ सन् 1865 में संस्कृत के प्रथम प्रोफेसर, 'हेनडरिक केरन' हुए। बीसवीं शताब्दी में हिंदी भाषा की भी पढ़ाई शुरू हुई जहाँ प्रतिवर्ष पचीस विद्यार्थी स्नातक और स्नातकोत्तर में उत्तीर्ण होते हैं।

व्याख्यान के बाद प्रो. पुष्पिता के हिंदी कविता-संग्रह 'शब्दों में रहती है वह' के डच भाषा में अनूदित संग्रह का लोकार्पण हुआ। पुस्तक की प्रथम प्रति उन्होंने लेडिंग विश्वविद्यालय के केरन इंस्टीट्यूट के निदेशक और संस्कृत के विद्वान प्रो. आरलो ग्रीफिथ को भेंट की। तदुपरांत डॉ. तेयो दम्स्त्येक ने अंग्रेजी में अपना वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि "पुष्पिता की कविताएँ प्रेम की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति की कविताए हैं जिनमें भारतीय और ईश्वरीय आस्था का प्रभाव है।"

हिंदी से डच भाषा में अनुवाद करनेवाले अनुवादक--द्वय लाडोवाइक और डिक प्लकर में से डिक साहब ने तीन अनूदित कविताओं का प्रभावपूर्ण पाठ किया। डिक साहब भारतीय संस्थान के निदेशक होने के साथ ही डच और हिंदी भाषा के प्रखर विद्वान हैं। काव्य-पाठ से पूर्व जब प्रो. पुष्पिता ने श्रोताओं से पूछा कि कितने लोग हिंदी-भाषा जानते और समझते हैं तो उपस्थित श्रोताओं में से साठ प्रतिशत लोगों ने हिंदी जानने के प्रति अपनी सहमति जतायी, जिससे हिंदी में काव्य-पाठ करने का उत्साह दुगुना हो गया। ●●

प्रिय प्रधान संपादक जी, मॉरीशस, 19.8.2008

नमस्कार।

विश्व हिंदी समाचार का दूसरा अंक मिला। धन्यवाद।

हिंदी के पाठकों को विश्व में हो रही हिंदी की गतिविधियों की जानकारी मिलती रहे, इसके लिए ऐसी एक पत्रिका की नितांत आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इस आवश्यकता की पूर्ति हुई। यह अति प्रसन्नता की बात है। आप साधुवाद के पात्र हैं।

पत्रिका का आकार-प्रकार सुंदर है। कागज़, छपाई आदि चित्ताकर्षक हैं और लेख ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने और नागरी लिपि को सर्वमान्य संबंधी लेख सराहनीय हैं।

शुभकामनाओं सहित।

शुभाकांक्षी,

वेणीमाधव रामखेलावन

दक्षिण अफ्रीका से समाचार

प्रो. श्रीमती उषा देवी शुक्ला

इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में हिंदी भाषा के लिए भारत के साथ संपूर्ण विश्व में अनेक प्रकार के प्रयत्न किया जा रहे हैं, जिससे कि यह विश्व-भाषा के रूप में एक सशक्त एवं सम्मानित संप्रेषण माध्यम बन सके और उसमें रचित विपुल साहित्य का भी प्रसार हो।

दक्षिण अफ्रीका में सन् 2008 में हिंदी-भाषी भारतवंशी अपनी हिंदी भाषा के प्रति अत्यंत गौरव तथा हर्ष महसूस कर रहे हैं। 25 अप्रैल, 1948 को स्थापित 'हिंदी शिक्षा संघ-दक्षिण अफ्रीका' सन् 2008 में अपनी हीरक जयंती मना रहा है। इस महान उपलब्धि के उपलक्ष्य में शुक्रवार 25 अप्रैल, 2008 को डर्बन नगर स्थित 'गुजराती हिंदू संस्कृति केंद्र' के सभागार में एक भव्य समारोह आयोजित किया गया। इस उत्सव का एक उद्देश्य था हिंदी प्रचारकों और प्रेमियों की पुरानी पीढ़ी को नई पीढ़ी से जोड़ना और भविष्य के लिए प्रेरणा का सृजन करना।

इसी हीरक जयंती वर्ष में हिंदी शिक्षा संघ ने डर्बन स्थित भारत के प्रधान कौंसलावास के साथ मिलकर अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस 29 फरवरी को मनाया। यह विश्व भर में 10 जनवरी को मनाया जाता है, दक्षिण अफ्रीका में उस समय ग्रीष्मकालीन अवकाश होने के कारण यह आयोजन समय पर नहीं हो सका। इस सहभागिता के परिणामस्वरूप हिंदी शिक्षा संघ के भाषा प्रचार और सांस्कृतिक विकास संबंधी प्रयत्नों एवं उपलब्धियों को मान्यता मिली।

यह हीरक जयंती फरवरी, 2009 तक मनाई जाएगी। हिंदी शिक्षा संघ क्योंकि दक्षिण अफ्रीका में हिंदी शिक्षण की स्वैच्छिक संस्थाओं में अग्रगण्य है तथा संघ से जुड़ी पाठशालाएँ देश के हिंदी-भाषी समाज को हिंदी का ज्ञान प्रदान करती है, संघ की 60वीं वर्षगाँठ अधिक महत्व रखती है ।

हिंदी शिक्षा संघ का एक महत्वपूर्ण अंग है हिंदी रेडियो स्टेशन 'हिंदवाणी' जो देश में हिंदी भाषा को पूर्णरूपेण समर्पित एकमात्र रेडियो स्टेशन है। इसी वर्ष में, 2008 रेडियो हिंदवाणी की दसवीं वर्षगाँठ मनाई जाएगी। 'हिंदवाणी' के जरिये लगभग एक लाख श्रोताओं को हिंदी-भाषा और संगीत सुनने को मिलते हैं। यह रेडियो स्टेशन हमारे लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

'हिंदी शिक्षा संघ-दक्षिण अफ्रीका' एक ऐसी संस्था है जो प्रतिबद्ध और कर्मठ स्वयंसेवकों द्वारा संचालित है। संघ की हिंदी शिक्षण प्रणाली आधुनिक शैक्षिक सिद्धांतों पर आधारित है। समय-समय पर व्याकरण, साहित्य, मौखिक कार्य इत्यादि पर कार्यशालाएँ चलाई जाती हैं जिससे शिक्षा और शिक्षार्थी दोनों लाभान्वित होते हैं।

हिंदी-भाषा के प्रति दक्षिण अफ्रीका में प्रेम, समर्पण और श्रद्धा के भाव हैं। इसलिए हिंदी इस देश में सदा बोली और सुनी जाएगी। ●●

आदरणीय भाई राजेंद्रजी,

सादर नमस्ते,

तीन दिन पहले **'विश्व हिंदी समाचार'** अंक-2 प्राप्त हुआ। विश्व हिंदी सचिवालय का यह त्रैमासिक प्रकाशन-प्रशंसा के काबिल है। विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए इस तरह के प्रयास सराहनीय है कि इनके माध्यम से व्यक्ति-व्यक्ति से, देश-देश से जुड़ते हैं। एक दूसरे के कार्यों से प्रेरणा लेते हैं और उत्साहित होते हैं।

खुशी होती है कि विदेशों में हिंदी भाषा को जान से प्यारी मानकर पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। इस तरह के पुनीत कार्य से जुड़े सभी महानुभाव साधुवाद के पात्र हैं।

संपादकीय में आपने देवनागरी लिपि और हिंदी वर्तनी के मानकीकरण की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। यह सचमुच महत्वपूर्ण मुद्दा है। इस तरह की समस्या से निकलने का एक रास्ता हो सकता है कि इस विषय की जानकारी देने वाले आलेख लिखें। पत्र-पत्रिकाएँ व पुस्तकें प्रकाशित करें और उन्हें जरूरत के स्थानों पर समय-समय पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था करें।

प्रबंध संपादक डॉ. विनोद बाला अरुण का सपना '....हिंदी एक प्राणवान अंतर्राष्ट्रीय भाषा में प्रतिष्ठित होगी' साकार हो।

हम अपनी मातृभाषा के उन्नयन, विकास, प्रचार-प्रसार के लिए गिलहरी जितना भी योगदान दे सकें तो गर्व की अनुभूति होती है।

कुछ सुझाव-

इस बुलेटिन में सृजनात्मक साहित्य के लिए भी जगह हो।

युवा पीढ़ी के लिए अनेक विधाओं में स्तंभ प्रारंभ किये जायें। युवा जिस अभियान से जुड़ेंगे--अंततः सफलता उसे ही मिलेगी।

बुलेटिन के कागजों का चिकनापन कुछ कम किया जाये तो पढ़ने में आसानी होगी।

देश-विदेश में संवाददाता नियुक्त किये जाएँ।

शुभेच्छु डॉ. पद्मजा शर्मा

e-mail:padmjaa@gmail.com

हिंदी पत्रिकाएँ

हिंदी चेतना

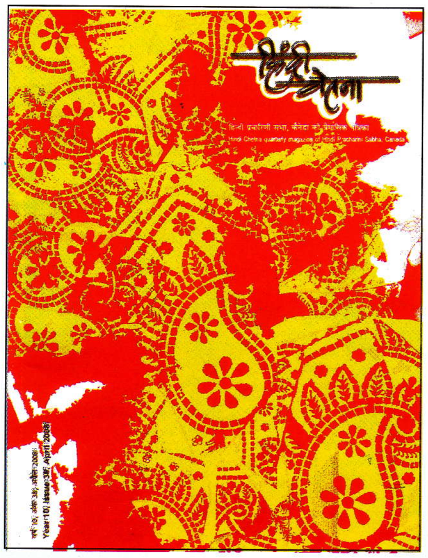

हिंदी प्रचारिणी सभा, कनाडा की त्रैमासिक अंतर्राष्ट्रीय साहित्य पत्रिका **'हिंदी चेतना'** दस वर्षों से लगातार प्रकाशित हो रही है। यह पत्रिका विश्व हिंदी साहित्य को एक ऐसा मंच प्रदान करती है, जिससे न केवल कनाडा बल्कि अमरीका, चीन, ब्रिटेन, भारत, नार्वे, फ्रांस, मॉरीशस आदि अनेक देशों के लेखक अपनी रचनाओं के ज़रिये विश्व के असंख्य हिंदी प्रेमियों से जुड़ने में गर्व महसूस करते हैं। इसके पाठकों का दायरा भी पूरा विश्व है। यह 'वसुधैव कुटुंबकम्' के सिद्धांतों में पूरी आस्था रखते हुए विश्वव्यापी हिंदी प्रेमियों को निरंतर जोड़े रखने का एक सार्थक प्रयास कर रही है। इसका अप्रैल, 2008 में प्रकाशित 38वाँ अंक अपने पिछले अंकों की ही तरह पूरे सजधज के साथ प्रकाशित हुआ है। इसमें प्रकाशित कहानियाँ, कविताएँ, लेख, हिंदी की गतिविधियों से संबंधित रिपोर्ट आदि सामग्री हिंदी पाठकों में वाकई हिंदी के प्रति एक चेतना जगाए रखने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है।

इस पत्रिका के प्रेमचंद स्मृति अंक का विमोचन आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर भारत के विदेश राज्यमंत्री श्री आनंद शर्मा जी ने न्यूयॉक में किया था। इस सम्मेलन में भाग लेने आए विश्व के प्रबुद्ध लेखकों व हिंदी प्रेमियोंने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। इसका अक्तूबर, 2008 का अंक भी विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा। यह विशेषांक हिंदी के वरिष्ठ एवं प्रख्यात साहित्यकार डॉ. नरेंद्र कोहली पर केंद्रित होगा। इसके लिए पत्रिका के संरक्षक एवं प्रमुख संपादक कनाडा निवासी श्री श्याम त्रिपाठी और उनके समस्त सहयोगी निश्चित रूप से बधाई के पात्र हैं। श्री त्रिपाठी **'हिंदी चेतना'** के कुशल संपादन व अपनी निबंध हिंदी सेवा के लिए अनेक वैश्विक मंचों से कई बार पुरस्कृत व सम्मानित भी हो चुके हैं।

संपर्क : Hindi Chetna, 6 Larksmere Court, Markham, Ontario L3R3R1
e-mail:hindichetna@yahoo.ca

वसुधा

कनाडा के टोरंटो शहर से हिंदी पत्रिका **'वसुधा'** का प्रकाशन स्नेह ठाकुर के संपादन में पिछले 5 वर्षों से निरंतर होता आ रहा है। इसका 19वाँ अंक जुलाई-सितंबर, 2008 में छपकर आ चुका है। **'वसुधा'** कोई संस्थागत पत्रिका न होकर स्नेह ठाकुर के हिंदी के प्रति प्रेम और समर्पण की परिचायक है। ऐसा बहुत कम देखने में आता है कि निजी प्रयासों से कोई साहित्य-प्रेमी विदेश में रहकर हिंदी की किसी त्रैमासिक पत्रिका का अनवरत प्रकाशन करने में सफल हो। आज तो हिंदी भाषी देशों से निकलनेवाली छोटी-छोटी पत्रिकाएँ भी किसी न किसी कारण दो-तीन अंकों के बाद दम तोड़ देती हैं। ऐसे में स्नेह ठाकुर का **'वसुधा'** प्रेम निश्चित ही प्रशंसनीय है।

इस अंक के संपादकीय में उन्होंने बड़ी ही रोचक शैली में अपनी साहित्यिक गतिविधियों भरी भारत की यात्रा का विस्तृत वृतांत देते हुए अपने असंख्य साहित्यकार मित्रों का उल्लेख किया है। हर बार की तरह **'वसुधा'** का 19वाँ अंक भी कहानियाँ, लेखों, संस्मरणों, कविताओं और अंतरंग बातचीत से भरपूर है। इसमें डॉ. हरजेंद्र चौधरी की 'नए फ्लैट में' और उषा वर्मा की **'इस बार'** तनावपूर्ण रिश्तों की अद्‌भुत कहानियाँ हैं।

इन दोनों कहानियों की भाषा सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण है। उषा वर्मा ने अपनी कहानी 'इस बार' में वृद्धावस्था की लाचारी और असुरक्षा की भावना का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है।

'वसुधा' के इस अंक में हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकारों डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय और डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल के लेख और संस्मरण प्रकाशित हुए हैं। इस अंक की सबसे बड़ी उपलब्धि है कथाकार मन्नू भंडारी से संतोष गोयल की अंतरंग बातचीत, 'लेखन मेरी जिंदगी का महत्वपूर्ण हिस्सा है'। हिंदी साहित्य प्रेमियों को इस बातचीत में अनेक ज्ञानवर्धक प्रसंग मिलेंगे।

आशा है **'वसुधा'** की यह साहित्यक यात्रा आगे भी इसी तरह लगातार चलती रहेगी।

संपर्क : 16, Revlis Crescent, Toronto, Ontario M1v-1E9 Canada

हिंदी के देवनागरीकरण का अभियान चलाना नितांत आवश्यक है।

नीदरलैंड्स, 10.9.2008

परम आदरणीय राजेंद्र जी,

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा प्रकाशित 'विश्व हिंदी समाचार' के अंक-2 में माननीय श्री धर्म गोकुल का कथन हिंदी को विश्व में फैलाना है तो नागरी लिपि को भी फैलाना होगा और आपका संपादकीय 'जय हिंदी, जय नागरी, जय विश्व नागरी' वस्तुतः हिंदी की सर्वप्रथम आवश्यकता है। उल्लिखित चिंता वास्तव में चिंतनीय है। ई-मेल की त्वरित सुविधा ने विश्व के साथ-साथ स्वदेश में भी हिंदी का रोमनीकरण कर दिया है।

विश्व के अनेकानेक देशों में विकसित हो रही सरनामी जैसी हिंदी भाषा परिवार की बोलियों से बनी भाषा की अपनी लिपि देवनागरी न होकर रोमन है। रोमन लिपि के कारण यह विदेशी होने का प्रभाव छोड़ती है, लेकिन उच्चारण करते ही अपनी शब्द-संपदा से यह हिंदी भाषा का जयघोष करने लगती है। सूरीनाम के भारतीय दूतावास और भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में बतौर हिंदी प्रोफेसर कार्य करते हुए सरनामी के कवियों और गद्यकारों की रचनाओं का मैंने हिंदी लिपि (देवनागरी) में रूपांतरण किया और कुछ का हिंदी अनुवाद भी किया। ये पुस्तकें राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हैं। शायद इस ओर केंद्रीय हिंदी संस्थान और उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान जैसी हिंदी प्रचारक संस्थाओं का ध्यान अभी नहीं गया है।

हिंदी भाषा के वैश्वीकरण के लिए हिंदी के देवनागरीकरण का अभियान चलाना नितांत आवश्यक है। इसलिए मॉरीशस स्थित विश्व हिंदी सचिवालय के मंच की इस पुकार पर मैं हॉलैंड स्थित अपने फाउंडेशन की ओर से भी समर्थन करती हूँ। इसके प्रचार में सक्रियता के लिए मैं वचन भी देती हूँ।

हिंदी की हिंदी-लिपि (देवनागरी) से ही भाषा के प्राणों की रक्षा हो सकती है क्योंकि देवनागरी लिपि हिंदी की देह है। हिंदी भाषा की अस्मिता का साधन है। यदि यही न रहेगी तो हिंदी की पहचान के लिए प्रचार और प्रसार का आधार क्या होगा ?

माननीय डॉ. विनोद बाला जी सहित अन्य मित्रों को भी इस सार्थक अभियान के लिए बधाई और शुभकामनाएँ।

पुष्पिता अवस्थी
निदेशक, हिंदू यूनिवर्स सेंटर

हिंदी के देवनागरीकरण का अभियान चलाना नितांत आवश्यक है।

विश्व के सबसे ताकतवर मुल्क अमेरिका में हिंदी धीमी रफ्तार से सही, पर अपना स्थान बना रही है। यह मानना है अमेरिका में हिंदी के प्रसार-प्रसार में लगे प्रो. हरमन वॉन ऑलफन का।

पिछले दिनों इंडो-एशियन न्यूज सर्विस से विशेष बातचीत में प्रो. ऑलफन ने कहा, वर्ष 1960 के आस-पास ही अमेरिका में हिंदी की पढ़ाई शुरू हुई थी और मेरा संबंध हिंदी जगत से पिछले करीब 45 वर्षों से हैं।

उन्होंने कहा कि प्रवासी भारतीय अमेरिका आए तो हिंदी के प्रचार-प्रसार में गति आई, क्योंकि प्रवासी बच्चे हिंदी पढ़ाए जाने को लेकर स्थानीय सरकार पर दबाव बना रहे थे। यह सही है कि अब तक अमेरिका के हाई स्कूलों में हिंदी का प्रवेश अधिक नहीं हुआ, लेकिन अब स्थिति बदल रही है।

ऑलफन ने जानकारी दी कि न्यूयॉर्क के पास न्यूजर्सी में हिंदी प्राध्यापिकाओं की नियुक्ति शुरू हुई है। ऐसी संभावना है कि सितंबर महीने से यहाँ के स्कूलों में नियमित तौर पर हिंदी की पढ़ाई शुरू हो जाएगी।

वह इस बात को स्वीकार करते हैं कि अमेरिका के शहरों में देवनागरी लिपि में लिखे हुए वाक्य या शब्द नहीं दिखाई पड़ते हैं। यहाँ तक कि भारतीय रेस्तरां, होटलों के नाम भी दूसरी लिपियों में लिखे हुए दिखलाई पड़ते हैं, जबकि अरबी, चीनी, फारसी लिपि पर आपकी नजर सहजता से पड़ जाएगी।

इसके बावजूद प्रो. ऑलफन निराश नहीं हैं। उनका मानना है कि अमेरिका में हिंदी भाषा तरक्की पर है। वह अपनी स्थिति मजबूत कर रही है और इसके सुखद परिणाम भी धीरे-धीरे सामने आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि 10 वर्ष पहले तक अमेरिका में केवल 25 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती थी, लेकिन अब 100 से भी अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। मनोरंजन की दुनिया में 'सलाम नमस्ते' नामक हिंदी रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किया जा रहा है।

(इंडो-एशियन न्यूज सर्विस से साभार)

विश्व हिंदी सम्मेलनों के मंतव्य

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन

(10-14 जनवरी, 1975 नागपुर, भारत)

1. संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए।

2. वर्धा में विश्व हिंदी विद्यापीठ की स्थापना हो।

3. विश्व हिंदी सम्मेलनों को स्थायित्व प्रदान करने के लिए ठोस योजना बनाई जाए।

द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन

(28-30 अगस्त, 1976 मोका, मॉरीशस)

1. मॉरीशस में एक विश्व हिंदी केंद्र की स्थापना की जाए जो सारे विश्व में हिंदी की गतिविधियों का समन्वय कर सके।

2. एक अंतर्राष्ट्रीय हिंदी पत्रिका का प्रकाशन किया जाए जो भाषा के माध्यम से ऐसे समुचित वातावरण का निर्माण कर सके जिसमें मानव विश्व का नागरिक बना रहे और विज्ञान तथा अध्यात्म की महान शक्ति एक नए समन्वित सामंजस्य का रूप धारण कर सके।

3. हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में एक आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान मिले। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक समयबद्ध कार्यक्रम बनाया जाए।

तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन

(28-30 अक्तूबर, 1983 नई दिल्ली, भारत)

1. अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार की संभावनाओं का पता लगातार इसके लिए गहन प्रयास किए जाएँ।

2. हिंदी के विश्वव्यापी स्वरूप को विकसित करने के लिए विश्व हिंदी विद्यापीठ स्थापित करने की योजना को मूर्त रूप दिया जाए।

3. विगत दो सम्मेलनों में पारित संकल्पों की संपुष्टि करते हुए यह निर्णय लिया गया कि अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के विकास और उन्नयन के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक स्थायी समिति का गठन किया जाए। इस समिति में देश-विदेश के लगभग 25 व्यक्ति सदस्य हो।

चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन

(2-4 दिसंबर, 1993 मोका, मॉरीशस)

1. विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस में स्थापित किया जाए।

2. भारत में अंतर्राष्टीय हिंदी विश्वविद्यालय स्थापित किया जाए।

3. विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ खोले जाएँ।

4. भारत सरकार विदेशों से प्रकाशित दैनिक समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें प्रकाशित करने में सक्रिय सहायता करे।

5. हिंदी को विश्व मंच पर उचित स्थान दिलाने में शासन और जन समुदाय विशेष प्रयत्न करे।

6. विश्व के समस्त हिंदी प्रेमी अपने निजी एवं सार्वजनिक कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें और यह संकल्प लें कि वे कम से कम अपने हस्ताक्षरों, निमंत्रण पत्रों, निजी पत्रों और नामपट्टों में हिंदी का प्रयोग करेंगे।

7. सम्मेलन के सभी प्रतिनिधि अपने-अपने देशों की सरकारों से संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के लिए समर्थन प्राप्त करने का सार्थक प्रयास करें।

पांचवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन

(4-8 अप्रैल, 1996 पोर्ट ऑफ स्पेन, त्रिनिदाद एंड टोबेगो)

1. विश्वव्यापी भारतवंशी समाज हिंदी को अपनी संपर्क भाषा के रूप में स्थापित करेगा।

2. मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना के लिए भारत में एक अंतर-सरकारी समिति बनाई जाए।

3. सभी देशों, विशेषकर जिन देशों में आप्रवासी भारतीय बड़ी संख्या में हैं, उनकी सरकारें अपने-अपने देशों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था करें। उन देशों की सरकारों से आग्रह किया जाए कि वे हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के लिए राजनीतिक योगदान और समर्थन दें।

छठा विश्व हिंदी सम्मेलन

(14-18 सितंबर, 1999 लंदन)

1. विश्व भर में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन, शोध, प्रचार-प्रसार और हिंदी सृजन में समन्वय के लिए महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय केंद्र सक्रिय भूमिका निभाए।

2. विदेशों में हिंदी के शिक्षण, पाठ्यक्रमों के निर्धारण, पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण, अध्यापकों के प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था भी विश्वविद्यालय करे और सुदूर शिक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाए।

3. मॉरीशस सरकार अन्य हिंदी-प्रेमी सरकारों से परामर्श कर

विश्व हिंदी सम्मेलनों के मंतव्य

शीघ्र विश्व हिंदी सचिवालय स्थापित करे।

4. हिंदी को संयुक्त राष्ट्र में मान्यता दी जाए।

5. हिंदी की सूचना तकनीक के विकास, मानकीकरण, विज्ञान एवं तकनीकी लेखन, प्रसारण एवं संचार की अद्यतन तकनीक के विकास के लिए भारत सरकार एक केंद्रीय एजेंसी स्थापित करे ।

6. नई पीढ़ी में हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए आवश्यक पहल की जाए।

7. भारत सरकार विदेश स्थित अपने दूतावासों को निदेश दे कि वे भारतवंशियों की सहायता से विद्यालयों में एक भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था करवाएँ।

<u>सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन</u>

(5-9 जून, 2003 पारामारिबो, सूरीनाम)

1. संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाया जाए।

2. विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ की स्थापना हो।

3. भारतीय मूल के लोगों के बीच हिंदी के प्रयोग के प्रभावी उपाय किए जाएं।

4. हिंदी के प्रचार हेतु वेबसाइट की स्थापना और सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग हो।

5. हिंदी विद्वानों की विश्व-निर्देशिका का प्रकाशन किया जाए।

6. विश्व हिंदी दिवस का आयोजन हो।

7. कैरेबियन हिंदी परिषद की स्थापना हो।

8. दक्षिण भारत के विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग की स्थापना हो।

9. हिंदी पाठ्यक्रम में विदेशी हिंदी लेखकों की रचनाओं को शामिल किया जाए।

10. सूरीनाम में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था की जाए।

<u>आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन</u>

(13-15 जुलाई, 2007 न्यूयॉर्क)

1. विदेशों में हिंदी शिक्षण और देवनागरी लिपि को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से दूसरी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए एक मानक पाठ्यक्रम बनाया जाए तथा हिंदी के शिक्षकों को मान्यता प्रदान करने की व्यवस्था की जाए।

2. विश्व हिंदी सचिवालय के कामकाज को सक्रिय करने एवं उद्देश्यपरक बनाने के लिए सचिवालय को भारत तथा मॉरीशस सरकार सभी प्रकार की प्रशासनिक एवं आर्थिक सहायता प्रदान करें और दिल्ली सहित विश्व के चार-पांच अन्य देशों में इस सचिवालय के क्षेत्रीय कार्यालय खोलने पर विचार किया जाए। सम्मेलन सचिवालय से यह आह्वान करता है कि हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने के लिए विश्व मंच पर हिंदी वेबसाइट बनाई जाए।

3. हिंदी में ज्ञान-विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी विषयों पर सरल एवं उपयोगी हिंदी पुस्तकों के सृजन को प्रोत्साहित किया जाए। हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय बनाने के प्रभावी उपाय किए जाएं। एक सर्वमान्य व सर्वत्र उपलब्ध यूनिकोड को विकसित व सर्वसुलभ बनाया जाए।

4. विदेशों में जिन विश्वविद्यालयों तथा स्कूलों में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन होता है उनका एक डेटाबेस बनाया जाए और हिंदी अध्यापकों की एक सूची भी तैयार की जाए।

5. यह सम्मेलन विश्व के सभी हिंदी प्रेमियों और विशेष रूप से प्रवासी भारतीयों तथा विदेशों में कार्यरत भारतीय राष्ट्रिकों से भी अनुरोध करता है कि वे विदेशों में हिंदी भाषा, साहित्य के प्रचार-प्रसार में योगदान करें।

6. वर्धा स्थित महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में विदेशी हिंदी विद्वानों के अनुसंधान के लिए शोधवृत्ति की व्यवस्था की जाए।

7. केंद्रीय हिंदी संस्थान भी विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार व पाठ्यक्रमों के निर्माण में अपना सक्रिय सहयोग दे ।

8. विदेशी विश्वविद्यालयों में हिंदी पीठ की स्थापना पर विचार-विमर्श किया जाए।

9. हिंदी को साहित्य के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और वाणिज्य की भाषा बनाया जाए।

10. भारत द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर आयोजित की जाने वाली संगोष्ठियों व सम्मेलनों में हिंदी को प्रोत्साहित किया जाए।

कनाडा में हिंदी राइटर्स गिल्ड समारोह

सुमन कुमार घई

प्रख्यात कथाकार डॉ. महीप सिंह द्वारा उद्‌घाटन

हिंदी राइटर्स गिल्ड का उद्‌घाटन समारोह 9 अगस्त, 2008 को ओकविल, कनाडा में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम की गरिमा विशेष अतिथि डॉ. महीप सिंह की उपस्थिति से और भी बढ़ गई। डॉ. महीप सिंह न केवल प्रख्यात कथाकार और हिंदी साहित्य के विद्वान हैं, बल्कि उनकी साहित्य के प्रति प्रतिबद्धता भी प्रसिद्ध है। उन्होंने हिंदी लेखन को आजीवन, विभिन्न ढंगों से प्रोत्साहित किया है- चाहे वह 'सचेतन कहानी आंदोलन' हो या 'संचेतना' पत्रिका का कितने ही दशकों से निरंतर प्रकाशन। चाहे वह 'भारतीय लेखक संगठन' का गठन हो या 'पंजाबी राइटर्स कोऑपेरेटिव' की सक्रिय अध्यक्षता। हिंदी राइटर्स गिल्ड जैसी संस्था; जिसके उद्‌देश्य डॉ. महीप सिंह की विचारधारा के समानांतर है; के उद्‌घाटन के लिए शायद ही कोई इतना उपयुक्त साहित्यकार होता।

कार्यक्रम आरंभ करते हुए डॉ. शैलजा सक्सेना ने उपस्थित श्रोताओं व लेखकों का स्वागत किया और मानोषी चैटर्जी को सरस्वती वंदना गायन के लिए आमंत्रित किया। मानोषी न केवल एक अच्छी लेखिका हैं वह शास्त्रीय संगीत की निपुण गायिका भी हैं। डॉ. महीप सिंह के द्वारा दीप प्रज्वलन के पश्चात् विजय विक्रांत ने मुख्य अतिथि का परिचय देते हुए उनका स्वागत किया। इसके पश्चात् विजय विक्रांत ने डॉ. महीप सिंह को समारोह का औपचारिक उद्‌घाटन करने व आशीर्वाद के कुछ शब्द कहने के लिए आमंत्रित किया।

डॉ. महीप सिंह ने कहा कि जो समाज अपनी मूलभूत जड़ों से जुड़ा रहता है वही समाज विकास कर पाता है। उन्होंने 'हिंदी राइटर्स गिल्ड' जैसी संस्था की स्थापना को इसी संदर्भ में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि कहा। उनके प्रोत्साहन भरे शब्दों के बाद कार्यक्रम का अगला चरण आरंभ हुआ।

डॉ. शैलजा सक्सेना ने 'पावर-प्वाइंट प्रेजेंटेशन' के साथ उपस्थित श्रोताओं व दशकों को 'हिंदी राइटर्स गिल्ड' के उद्‌देश्य, गठन व कार्यविधि से परिचित करवाया। उन्होंने कहा कि यहाँ पर विभिन्न साहित्यिक संगठनों के लगातार प्रयास से आज गिल्ड जैसी संस्था की आवश्यकता अनुभव होती है। 'हिंदी राइटर्स गिल्ड' संस्था का उद्‌देश्य कनाडा में हिंदी साहित्य के प्रकाशन को प्रोत्साहित करना है। इस समय इंडो-कानाडियन लेखकों की पुस्तकें अधिकतर भारत में छपती हैं। इस प्रस्तुति के पश्चात् साहित्यिक कार्यक्रम आरंभ हुआ।

हिंदी साहित्य के उद्‌भव से आधुनिक काल तक की यात्रा की सूत्रधार डॉ. शैलजा सक्सेना थीं। उन्होंने काव्य-यात्रा का आरंभ कालिदास की संस्कृत कविता से किया और मानोषी चैटर्जी को मंच पर आमंत्रित किया। मानोषी चैटर्जी ने कालिदास के मेघदूत के कुछ श्लोकों का अपने मधुर स्वर में गायन करते हुए उसका अनुवाद भी किया। इसके पश्चात् विजय विक्रांत ने अमीर खुसरो की हिंदी साहित्य को दी गई भेंट को बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। डॉ. शैलजा सक्सेना ने लोक साहित्य के महत्व को रेखांकित करने के लिए इंद्रा वर्मा को मंच पर आमंत्रित किया जिन्होंने एक 'चैती' गाई। विभिन्न कालों व वादों से परिचित करवाते हुए डॉ. शैलजा सक्सेना यह काव्य-यात्रा आधुनिक काल तक ले आईं। उन्होंने निर्मल सिद्धू को मुक्तिबोद्ध की कविता 'अंधेरे में' का एक अंश पढ़ने के लिए आमंत्रित किया। निर्मल सिद्धू ने इस अंश को पहले लाचार भाव से पढ़ा और फिर उसे ही आक्रोश भाव के साथ। एक ही अंश की दो अलग भावों की प्रस्तुतियाँ सुनकर कवि की रचना-मनःस्थिति का बोध हुआ। शैलजा जी ने हिंदी साहित्य की फिल्मी जगत को देन को भी रेखांकित किया और इसे प्रमाणित किया भुवनेश्वरी पांडे ने 'बंदिनी' फिल्म का एक गीत सुनाकर। इसी यात्रा की अगली कड़ी, अनूदित साहित्य की, पाराशर गौड़ ने अपनी गढ़वाली कविता और उसके हिंदी अनुवाद के पाठ के साथ जोड़ी। काव्य विधा का अंत अगली पीढ़ी यानी बाल कविता के साथ हुआ। काव्य

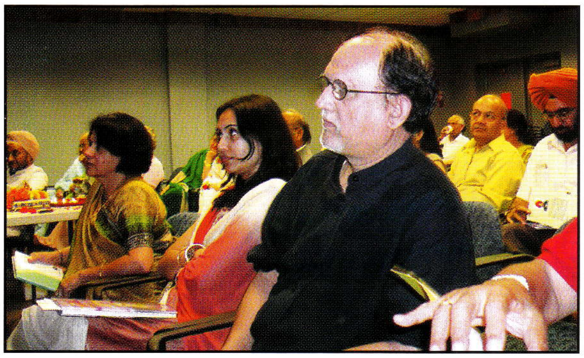

समारोह में उपस्थित श्रोतागण

पाठ किया अनमोल सक्सेना ने सियाराम शरण गुप्त की कविता हिमालय का।

गद्य विधा का आरंभ आशा बर्मन ने महादेवी वर्मा के भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के संस्मरण के साथ किया। समय बहुत तेजी से भागा जा रहा था। समय को ध्यान में रखते हुए लघुकथा की प्रस्तुति से पहले ही डॉ. महीप सिंह को कहानी विधा के विषय में बोलने के लिए और अपनी एक कहानी सुनाने के लिए आमंत्रित किया गया। डॉ. साहिब ने बहुत विस्तार के साथ आधुनिक कहानी का इतिहास समझाया और कहा कि कहानी कविता की अपेक्षा काफी देर के बाद भारत में लिखी जानी शुरू हुई। पश्चिम के कई लेखकों के उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि किस तरह से हिंदी कहानी उनसे एक कदम पीछे रही है। अपनी 'सचेतन' कहानी के विषय में बोलते हुए उन्होंने कहा कि जब कहानी अमूर्त हो जाती है तो वह आम जनता में लोकप्रिय नहीं हो पाती। सचेतन कहानी इसी प्रक्रिया से बचने का एक प्रयास है।

प्रवासी कहानी के महत्व को आज के जगत में उन्होंने रेखांकित करते हुए कहा कि भिन्नता जो विशिष्टता की दिशा में ले जाए वह स्वीकार्य होनी चाहिए। प्रवासी लेखकों को अपना कलापक्ष निखारने के लिए, भारत में रचे जा रहे आधुनिक साहित्य से परिचित होना चाहिए। उन्होंने अपनी ग्रंथावली में से 'कितने सैलाब' कहानी का पाठ किया।

अंत में सुमन कुमार घई ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। ●●